B. A. Part - III
Philosophy Paper - 05

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

The Immortality Of The Soul

(Part - IV)

आत्मा को अमर सिद्ध करने के सन्दर्भ में यह आधार प्रस्तुत किया जाता है कि आत्मा भौतिक पदार्थों से भिन्न है यह अविनाशी तथा भौतिक पदार्थों ~~से भिन्न है~~ का निर्देशक है चूँकि भौतिक पदार्थ नश्वर है, इसलिए आत्मा उनका निर्देशक तभी मानी जा सकती है जबकि वह अमर हो। यदि भौतिक पदार्थों की तरह आत्मा भी नश्वर होती तो वह भौतिक पदार्थों का निर्देशन कभी नहीं कर पाती। क्योंकि एक नश्वर सत्ता दूसरी अन्य नश्वर सत्ता के निर्देशन में सर्वथा असमर्थ होती है। नश्वर सत्ताओं का निर्देशक अवश्य ही कोई अनश्वर या अमर सत्ता होगी और वह अमर सत्ता आत्मा ही है।

उपर्युक्त सारे जोरदार तर्कों से आत्मा की अमरता में विश्वास करने का आधार स्पष्ट होता है किन्तु ज्ञात है कि आत्मा की अमरता का विचार सार्वभौम नहीं। इसके विरुद्ध भी अनेक आपत्तियाँ की गयी हैं। अतः अब हम देखेंगे कि ये आपत्तियाँ भी आत्मा की अमरता के विरुद्ध कहाँ तक संगत है।

सर्वप्रथम चार्वाक एवं अन्य

भौतिकवादियों की आपत्ति रही है कि आत्मा का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता, इसलिए उसकी सत्ता असत्य है, वह अमर नहीं है।

प्रत्यालोचनात्मक दृष्टि से यह सही नहीं जान पड़ती। क्योंकि उक्त आपत्ति आत्मा के प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होने के कारण है। किन्तु ज्ञान का साधन मात्र प्रत्यक्ष ज्ञान ही नहीं है, बल्कि इसके अतिरिक्त आत्मानुभूति और अनुमान भी तो ज्ञान के साधन है। अतः इन्द्रिय ज्ञान या प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होने के कारण आत्मा की अमरता को खण्डित करना ठीक नहीं है। इस सन्दर्भ में टायलर आदि विचारकों ने जोरदार शब्दों में स्वीकार किया कि 'प्रत्यक्ष' ज्ञान का नहीं होने में कोई सम्बन्ध नहीं है, प्रत्यक्ष ज्ञान का नहीं होना भी वस्तुओं के अस्तित्व असंदिग्ध होता है।

कुछ आलोचकों का विचार है कि जिस वस्तु का शुरुआत होता है उसका अन्त भी होता है। आत्मा की शुरुआत भी होती है, इसलिए उसका भी अन्त है, यानी वह नश्वर है।

प्रत्यालोचनात्मक दृष्टि से यह आपत्ति संगत नहीं है, क्योंकि भले ही यह बात सही है कि जिसकी शुरुआत है उसका अन्त भी। किन्तु यह सार्वभौम सही नियम नहीं है यह तो मात्र भौतिक जगत के लिए सत्य होता है, आत्मा तो भौतिकता से परे है। अतः यह बात सत्य की कसौटी पर खरा नहीं उतरती कि आत्मा की शुरुआत है। क्योंकि आत्मा तो एक आध्यात्मिक सत्ता

है, जो शाश्वत होने के कारण जन्म-मरण से परे है अतः आत्मा शुरुआत और अन्त से परे है। इसलिए उक्त आधार पर आत्मा को खण्डित करना असंगत है।

कुछ आलोचकों ने बतलाया कि यदि सभी आत्माओं को अमर मान लिया जाय तब तो उनके रहने के लिए इस विश्व में जगह नहीं मिलेगा। इसलिए आत्मा को अमर नहीं माना जा सकता।

— To be continued —